-: वर्णमाला :-

- भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि होती है, और इस ध्वनि को वर्ण कहते हैं।
- वर्णो के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।
- हिन्दी वर्णमाला में कुल वर्णो की संख्या 52 है।

- हिन्दी वर्णमाला को 2 भागों में बाँटा गया है।
  1. स्वर 2. व्यंजन

- जो वर्ण स्वतन्त्र रुप से बोले जाते हैं वे स्वर कहलाते हैं।

—: स्वर के प्रकार :—

- मूल / ह्रस्व / लघु स्वर — 1 मात्रा - अ, इ, उ, ऋ
- दीर्घ स्वर — 2 मात्रा - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
- प्लुत स्वर — 3 मात्रा - ओ३म

- जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है वे मूल स्वर या ह्रस्व स्वर या लघु स्वर कहलाते हैं। जैसे :- अ, इ, उ

- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से अधिक समय लगता है। वह दीर्घ स्वर कहलाते हैं। जैसे :- आ, ई, ऊ

- जिन स्वरों के उच्चारण में सबसे अधिक समय लगता है। वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। जैसे - ओ३म।

- स्वरों की संख्या 11 होती है। व आयोगवाह स्वर 2 होते हैं। कुल स्वर 13 होते हैं। "अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ" व अं, अः

- अनुस्वार के लिए (ं) तथा विसर्ग के लिए (:) होता है।

Scanned by CamScanner

—: स्वरों का वर्गीकरण :-

(1) मूल स्वर / ह्रस्व स्वर / लघु स्वर = अ, इ, उ, ऋ (4)
(2) दीर्घ स्वर = आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (7)
(3) दीर्घ संधि स्वर / सजातीय स्वर = आ, ई, ऊ (3)
(4) संयुक्त स्वर / विजातीय स्वर = ~~आ, ई, ऊ~~ ए, ऐ, ओ, औ (4)

संयुक्त स्वर या स्वरों का निर्माण :-

1) अ + इ = ए
2) अ + ए = ऐ
3) अ + उ = ओ
4) अ + ओ = औ

स्वरों का उच्चारण स्थान

1- कंठ्य स्वर - अ, आ
2- तालव्य स्वर - इ, ई
3- ओष्ठ स्वर - उ, ऊ
4- मूर्धन्य स्वर - ऋ
5- कंठ्यतालव्य स्वर - ए, ऐ
6- कंठ्य ओष्ठ स्वर - ओ, औ

जीभ के आधार पर स्वरों का उच्चारण स्थान

1. अग्र स्वर - इ, ई, ए, ऐ (4)
2. मध्य स्वर - अ (1)
3. पश्च स्वर - आ, उ, ऊ, ओ, औ (5)

Scanned by CamScanner

— : व्यंजन :—

• जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं। व्यंजन कहलाते हैं।
• ये 6 प्रकार के होते हैं।

1- स्पर्शी / स्पर्श व्यंजन - क से म तक (25)
2- उत्क्षिप्त या द्विगुण व्यंजन - ड़, ढ़ (2)
3- अनुनासिक / नासिक - ङ, ञ, ण, न, म (5)
(प्रत्येक वर्ग का पाँचवां वर्ण होता है)
4- अन्तःस्थ व्यंजन - य, र, ल, व (4)
5- ऊष्म व्यंजन या संघर्षी व्यंजन - श, ष, स, ह (4)
6- संयुक्त व्यंजन - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र (4)

वर्ण तालिका

वर्ग	स्पर्शी व्यंजन "क से म तक - 25" 1	2	3	4		अनुनासिक व्यंजन	उच्चारण स्थान	अ…
क वर्ग	क	ख	ग	घ	–	ङ	क से कंठ्य व्यंजन	[illegible]
च वर्ग	च	छ	ज	झ	–	ञ	च से तालु यानि तालव्य व्यंजन	[illegible]
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	–	ण	मूर्धन्य व्यंजन	[illegible]
त वर्ग	त	थ	द	ध	–	न	दन्त व्यंजन	
प वर्ग	प	फ	ब	भ	–	म	ओष्ठ व्यंजन	

Scanned by CamScanner

- अल्पप्राण :- प्रत्येक वर्ग का 1, 3 एवं 5वाँ वर्ण अल्पप्राण कहलाता है।
- महाप्राण :- प्रत्येक वर्ग का 2, 4 वर्ण महा-प्राण कहलाता है।
- अघोष :- प्रत्येक वर्ग का 1 एवं 2 वाँ वर्ण अघोष कहलाता है।
- सघोष/घोष :- प्रत्येक वर्ग का 3, 4 एवं 5 वाँ वर्ण सघोष/घोष कहलाता है।

- अन्तःस्थ व्यंजन ~ य, र, ल, व - अल्पप्राण/सघोष
- अर्द्ध स्वर ~ य, व
- पार्श्विक व्यंजन ~ ल
- लुंठित व्यंजन ~ र
- ऊष्म/संघर्षी व्यंजन ~ श, ष, स, ह जिनमें से श, ष, स महाप्राण/अघोष तथा ह महाप्राण/सघोष होता है।
- संयुक्त व्यंजन ~ क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

संयुक्त व्यंजनों का निर्माण

क् + ष = क्ष
त् + र = त्र
ज् + ञ = ज्ञ
श् + र = श्र

वर्णमाला एक नजर में

- स्वरों की संख्या = 11
- अयोगवाह स्वर = 02
- कुल स्वरों की सं० = 13
- स्पर्शी व्यंजनों की सं० = 25
- द्विगुण व्यंजनों की सं० = 02
- अन्तःस्थ व्यंजनों की सं० = 04
- ऊष्म व्यंजनों की सं० = 04
- संयुक्त व्यंजनों की सं० = 04

कुल वर्णों की सं० = 52

Scanned by CamScanner

संधि का अध्ययन

"दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते हैं।"

जैसे :- • विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
(आ + अ = आ)

• शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी
(आ + अ = आ)

संधि के प्रकार या भेद

• ये तीन प्रकार की होती हैं।

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

• **स्वर सन्धि** :- स्वर के बाद स्वर अर्थात दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर सन्धि कहते हैं।

स्वर सन्धि के प्रकार या भेद

• यह पाँच प्रकार की होती हैं।

- दीर्घ सन्धि - आ, ई, ऊ
- गुण सन्धि - ए, ओ, अर (अगर ि, ु आदि की मात्रा दूसरे व तीसरे अक्षर पर हो।
- वृद्धि सन्धि - ऐ, औ (अगर े, ो की मात्रा दूसरे व तीसरे अक्षर पर हो तब
- यण सन्धि - य और व से पहले आधे अक्षर हों तब यण संधि होगी।
- अयादि सन्धि - यदि तीन अक्षरों के बीच य, व हों तब अयादि सन्धि होगी।

Scanned by CamScanner

1. दीर्घ सन्धि

Note:- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के बाद समान स्वर आए तो इन दोनों को मिलाकर दीर्घ कर देते हैं।

प्रथम नियम :- अ + आ या आ + अ या आ + आ

अ + आ → आ

आ + अ → आ

आ + आ → आ

उदाहरण :-

- शिक्षार्थी = शिक्षा + अर्थी
- विद्यार्थी = विद्या + अर्थी
- शिवालय = शिव + आलय
- महात्मा = महा + आत्मा
- परमात्मा = परम + आत्मा
- परमार्थ = परम + अर्थ
- रामागमन = राम + आगमन

अपवाद :-

- सत्याग्रह = सत्य + आग्रह
- दैत्यारि = दैत्य + अरि
- दिशान्तर = दिशा + अन्तर

द्वितीय नियम :- इ + ई या ई + इ या ई + ई

इ + ई → ई

ई + इ → ई

ई + ई → ई

उदाहरण :-

- हरीश = हरि + ईश
- रवीन्द्र = रवि + इन्द्र
- गिरीश = गिरि + ईश
- कपीश = कपि + ईश
- रवीश = रवि + ईश

तृतीयक नियम:- उ + ऊ या ऊ + उ या ऊ + ऊ

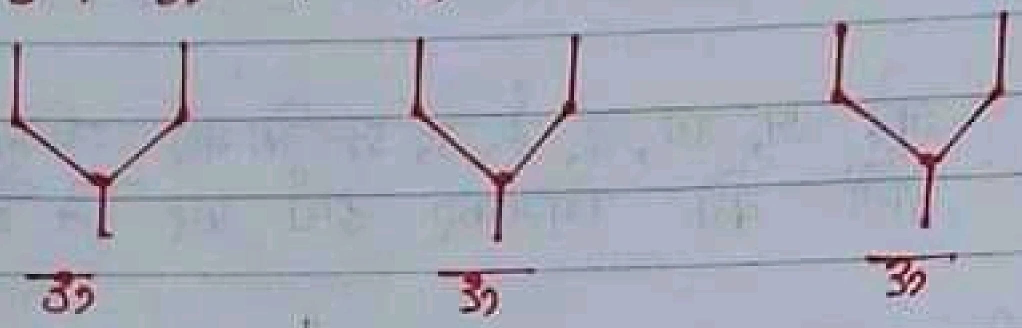

उदाहरण:-

- गुरूपदेश = गुरु + उपदेश
- वधूत्सव = वधू + उत्सव
- लघूर्मि = लघु + ऊर्मि
- लघूत्तर = लघु + उत्तर

2. गुण सन्धि

- यदि अ और आ के बाद इ, ई, उ, ऊ, ऋ स्वर आये तो इन दोनों को मिलाकर क्रमशः —
  - अ / आ + इ / ई = ए
  - अ / आ + उ / ऊ = ओ
  - अ / आ + ऋ = अर

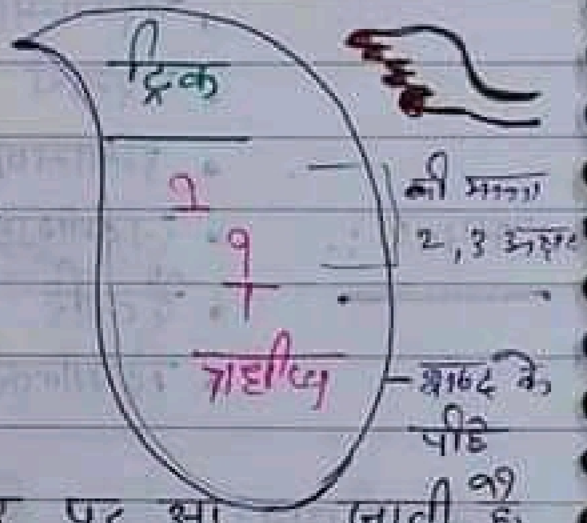

- छोटी ए (े) की मात्रा दूसरे या तीसरे अक्षर पर आ जाती है तो वह गुण सन्धि होती है।

उदाहरण:- **ए का नियम**

- सुरेन्द्र = सुर + इन्द्र (अ + इ)
- महेन्द्र = महा + इन्द्र (आ + इ = ए)
- सुरेश = सुर + ईश (अ + ई = ए)
- नरेश = नर + ईश (अ + ई = ए)
- कमलेश = कमल + ईश (अ + ई = ए)
- राकेश = राका + ईश (आ + ई = ए)
- रमेश = रमा + ईश (आ + ई = ए)

Scanned by CamScanner

ओ का नियम

- महोदय = महा + उदय (आ + उ = ओ)
- परोपकार = पर + उपकार (अ + उ = ओ)
- सूर्योदय = सूर्य + उदय (अ + उ = ओ)
- जलोर्मि = जल + ऊर्मि (अ + ऊ = ओ)
- महोत्सव = महा + उत्सव (आ + उ = ओ)
- चन्द्रोदय = चन्द्र + उदय (अ + उ = ओ)

अर् का नियम

- सप्तर्षि = सप्त + ऋषि (अ + ऋ = अर्)
- महर्षि = महा + ऋषि (आ + ऋ = अर्)
- देवर्षि = देव + ऋषि (अ + ऋ = अर्)
- ब्रह्मर्षि = ब्रह्म + ऋषि (अ + ऋ = अर्)

3. वृद्धि सन्धि

- यदि अ और आ के बाद ए, ऐ, ओ, औ स्वर आये तो इन दोनों को मिलाकर क्रमशः–

1- अ / आ + ए / ऐ = ऐ (ै)
2- अ / आ + ओ / औ = औ (ौ)

Trick
ै
ौ

Trick :- यदि एक मात्रा से दो मात्राएँ हो जाए तो वृद्धि सन्धि होगी।

- ऐ (ै) वाली मात्रा का नियम:—

- सदैव = सदा + एव (आ + ए = ै)
- तथैव = तथा + एव (आ + ए = ै)
- एकैक = एक + एक (अ + ए = ै)

Scanned by CamScanner

• मतैक्य = मत + ऐक्य (अ + ऐ = ऐ)
• रमैश्वर्य = रमा + ऐश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)
• महैश्वर्य = महा + ऐश्वर्य (आ + ऐ = ऐ)

औ (ौ) वाली मात्रा का नियम :-

• वनौषध = वन + औषध - अ + औ = औ (ौ)
• परमौषधि = परम + औषधि - अ + ओ = औ (ौ)
• परमौषध = परम + औषध - अ + औ = औ (ौ)
• महौजस्वी = महा + ओजस्वी - आ + ओ = औ (ौ)

4. यण सन्धि

Trick :- य त्याग से पहले अगर आधे अक्षर आयें तब यण सन्धि होगी।

(्य / ्व)

सन्धि के नियम :- यदि इ, ई, उ, ऊ, ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आये तो इन दोनो को मिलाकर क्रमश: —

य वर्ण का नियम	व वर्ण का नियम	ऋ का नियम
1 - इ / ई + अ = य	1. उ / ऊ + अ = व	ऋ + आ = रा
2 - इ / ई + आ = या	2. उ / ऊ + आ = वा	
3 - इ / ई + उ = यु	3. उ / ऊ + ए = वे	
4 - इ / ई + ऊ = यू		
5 - इ / ई + ए = ये		

Scanned by CamScanner

• 'य' वर्ण के उदाहरण: —

- अत्यधिक = अति + अधिक (इ + अ = य)
- अत्याचार = अति + आचार (इ + आ = या)
- प्रत्युपकार = प्रति + उपकार (इ + उ = यु)
- न्यून = नि + ऊन (इ + ऊ = यू)
- प्रत्येक = प्रति + एक (इ + ए = ये)

Note: यदि य वर्ण से पहले आधे वर्ण हों तो उनको छोटी इ की मात्रा में बदलकर लिख लेते हैं। तथा अगले वर्ण में छिपा हुआ वर्ण लिखते हैं।

उदाहरण :→ अत्यधिक ⟶ अति + अधिक

- इत्यादि = इति + आदि
- यद्यपि = यदि + अपि
- उपर्युक्त = उपरि + युक्त या उपरि + उक्त

• 'व' वर्ण के उदाहरण: -

- अन्वय = अनु + अय (उ + अ = व)
- स्वागतम = सु + आगतम (उ + आ = वा)
- अन्वेषण = अनु + एषण (उ + ए = वे)
- स्वच्छ = सु + अच्छ (उ + अ = व)

• 'त्र' वर्ण के उदाहरण: —

- पित्राज्ञा = पितृ + आज्ञा (ऋ + आ = त्रा)
- मात्राज्ञा = मातृ + आज्ञा (ऋ + आ = त्रा)

Scanned by CamScanner

5. अयादि सन्धि

• अगर 3 अक्षरों के बीच में आ/व हो तब अयादि संधि होगी।

Trick

① — य | व — ③

नियम :-

• जहाँ पर 'य' हो तो वहाँ पर ए/ऐ हो जाता है। (े ै)
• जहाँ पर व हो तो वहाँ पर ओ/औ हो जाता है। (ो ौ)

'य' का नियम

• नयन = ने + अन
• नायक = नै + अक
• गायक = गै + अक
• गायिका = गै + इका
• नायिका = नै + इका
• शयन = शे + अन
• चयन = चे + अन

'व' का नियम

• पवन = पो + अन
• भवन = भो + अन
• भावुक = भौ + उक
• पवित्र = पो + इत्र
• पावन = पौ + अन
• नाविक = नौ + इक
• धावक = धौ + अक

2. व्यंजन सन्धि :-

• Note :- जिस पर हो बिन्दी (ं) तो व्यंजन संधि होगी।

"व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है वह व्यंजन सन्धि कहलाती है।"

• Note:- जिसमें डेढ़ ($1\frac{1}{2}$) व्यंजन आये तो वह व्यंजन संधि होगी।

उदाहरण :- • संसार = सम् + सार • सम्पूर्ण = सम् + ~~सर~~ पूर्ण
• संयोग = सम् + योग • संरक्षक = सम् + रक्षक

Scanned by CamScanner

Ⓐ 'त' सम्बन्धी नियम :-

1- (त) के बाद यदि (ल) हो तो (त) का आधा ल यानि (ल्) हो जाता है।

उदाहरण :-
- तत + लीन = तल्लीन
- उत + लेख = उल्लेख
- उत + लंघन = उल्लंघन
- ख्वत + लास = ख्वल्लास
- उत + लास = उल्लास

2. (त) के बाद यदि (च)/(छ) हो तो (त) का आधा च यानि (च्) हो जाता है।

उदाहरण :-
- उत + चारण = उच्चारण
- सत + चरित्र = सच्चरित्र

3. (त) के बाद यदि (ज)/(झ) हो तो (त) का आधा ज यानि (ज्) हो जाता है।

उदाहरण :-
- सत + जन = सज्जन
- उत + जैन = उज्जैन
- उत + ज्वल = उज्ज्वल
- उत + झटिका = उज्झटिका

4. (त) के बाद यदि (ह) हो तो (त) का (द) तथा (ह) का (ध) हो जाता है।

उदाहरण :-
- उत + हार = उद्धार
- तत + हित = तद्धित
- उत + हित = उद्धित
-

Scanned by CamScanner

(8) 'छ' सम्बन्धी नियम :→

छ से पहले कोई लघु स्वर हो तो छ से पहले आया च मान च जोड़ देते हैं।

उदाहरण :-

- अनु + छेद = अनुच्छेद
- वि + छेद = विच्छेद
- परि + छेद = परिच्छेद
- स्व + छेद = स्वच्छेद

नियम :- वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में बदलाव

- यदि किसी वर्ग का पहला वर्ण क च ट त प का मेल किसी अनुनासिक अर्थात पाँचवें वर्ण से हो तो वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग का पाँचवाँ वर्ण में बदल जायेगा।

वर्ग	1	2	3	4	5
क	क	ख	ग	घ	ङ
च	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ट	ठ	ड	ढ	ण
त	त	थ	द	ध	न
प	प	फ	ब	भ	म

वर्ण — अनुनासिक वर्ण

Note: मे परिवर्तन इस प्रकार से होगा :—

क — ङ
च — ञ
ट — ण
त — न
प — म

प्रथम वर्ण → पाँचवाँ वर्ण

उदाहरण :-
- तत् + मय = तन्मय
- उत् + मुख = उन्मुख
- जगत् + नाथ = जगन्नाथ
- चित् + मय = चिन्मय
- वाक् + मय = वाङ्मय

Note- यहाँ दोनों वर्ण अनुनासिक है।

Scanned by CamScanner

नियम - वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन :

- यदि किसी वर्ग का पहला वर्ण क, च, ट, त, प का मेल किसी स्वर या तीसरे, चौथे वर्ण से हो या य, र, ल, व में किसी एक वर्ण से हो तो वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

परिवर्तन (1 → 3)

वर्ग	1	2	3	4	5
क	क	ख	ग	घ	ङ
च	च	छ	ज	झ	ञ
ट	ट	ठ	ड	ढ	ण
त	त	थ	द	ध	न
प	प	फ	ब	भ	म

(1–4: वर्ण; 5: अनुनासिक वर्ण)

में परिवर्तन इस प्रकार से होता है : —

प्रथम वर्ण	तीसरे वर्ण
क	ग
च	ज
ट	ड
त	द
प	ब

उदाहरण :-

- सत् + गुण = सद्गुण
- भगवत + गीता = भगवद्गीता
- उत् + देश्य = उद्देश्य
- दिक् + विजय = दिग्विजय
- कप् + ज = कब्ज
- दिक् + गज = दिग्गज
- दिक् + अंत = दिगंत
- वाक् + ईश = वागीश

Scanned by CamScanner